Impact Factor – 6.625

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International Multidisciplinary E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December-2019 Special Issue – 210

साहित्य व्यवहाराचे बदलते स्वरूप

Guest Editor:
Dr. Bhausaheb Game,
Principal,
MGV's Arts & Commerce College, Yeola
Dist. Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of the issue:
Prof. Raghunath Wakle
Dr. Gajanan Bhamare
Prof. Sharad Chavhan

Chief Editor:
Dr. Dhanraj Dhangar

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International Multidisciplinary E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December-2019 Special Issue – 210

साहित्य व्यवहाराचे बदलते स्वरूप

Guest Editor:
Dr. Bhausaheb Game,
Principal,
MGV's Arts & Commerce College, Yeola
Dist. Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of the issue:
Prof. Raghunath Wakle
Dr. Gajanan Bhamare
Prof. Sharad Chavhan

Chief Editor:
Dr. Dhanraj Dhangar

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 800/-

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
	मराठी विभाग		
1	साहित्य व्यवहाराचे बदलते स्वरूप	डॉ. एकनाथ पगार	05
2	साहित्य व्यवहाराचे बदलते स्वरूप	डॉ. धनराज धनगर	09
3	इंटरनेट वरील समृद्ध मराठी साहित्य	डॉ. प्रकाश शेवाळे	15
4	बदलते तंत्रज्ञान व साहित्य व्यवहार	प्रा.योगिता भामरे	21
5	बदलते तंत्रज्ञान व साहित्य व्यवहार	श्री महेश कुलकर्णी	26
6	साहित्य व्यवहाराचे बदलते स्वरूप : ब्लॉग लेखन	प्रा.विनोद भालेराव	29
7	ब्लॉग लेखन	प्रा. संदीप ठाकरे	32
8	साहित्याची बदलती आशयसूत्रे : चित्रपट	डॉ.गजानन भामरे	34
9	मराठी साहित्य व्यवहाराची बदलती प्रसार माध्यमे	प्रा. भारती सोनवणे	36
10	मराठी साहित्याचे बदलते स्वरूप	डॉ. शीला गाढे	45
11	१९९० नंतरचे मराठी कवितेचे बदलते स्वरूप	डॉ. भाऊसाहेब गमे	47
12	वाचन संस्कृतीतील बदलांचा परामर्श	डॉ. हेमराज बिरारीस	52
13	वाचन संस्कृतीतील बदल	प्रा. सुनिल खैरनार, डॉ. उज्ज्वला देवरे	55
14	वाचन संस्कृतीतील बदल	डॉ. खेहल मराठे	58
15	वाचन संस्कृतीतील बदल	प्रा.पूनम वाघ	61
16	वाचन संस्कृतीतील बदल	प्रा.ए.जी.नेरकर	64
17	वाचन संस्कृतीतील बदल	प्रा.नंदा बैसाणे	68
18	वाचन संस्कृतीची बदलती माध्यमे	प्रा. विनोद केदारे	71
19	मराठी भाषा आणि विविध क्षेत्रातील संधी	प्रा.मोहन सौदर्य	73
20	जागतिकीकरणाचा मराठी भाषेवरील प्रभाव	डॉ. अरुण पाटील	76
	हिंदी विभाग		
21	साहित्य व्यवहार का परीवर्तित स्वरूप	प्रा. कैलास बच्छाव	78
22	हिंदी नाटक साहित्य का परिवर्तित स्वरुप वक्ता-श्रोता के संदर्भ में	डॉ. व्ही.डी.सूर्यवंशी	80
23	जनसंचार माध्यमों में हिंदी भाषा की परिवर्तित स्थिति	सोनू शेन्डे	82
24	संचार माध्यमों में हिंदी भाषा का परिवर्तित स्वरूप	प्रा.श्रीमती वृषाली वडगे	85
25	हिंदी साहित्य लेखन का परिवर्तित स्वरूप	डॉ.जालिंदर इंगळे, प्रा.संदीप देवरे	88
26	हिंदी कहानी साहित्य का परिवर्तित स्वरूप	डॉ.डी.बी.महाजन, प्रा.आर.एन.वाकळे	90
27	हिंदी कहानी साहित्य का परिवर्तित स्वरूप विकासक्रम में	प्रा.बापू शेळके	93
28	हिंदी कहानी साहित्य का परिवर्तित स्वरुप	प्रा. सविता मुंढे	98
29	हिंदी कहानी साहित्य का परिवर्तित स्वरूप	प्रा. जितेंद्र थोरात	100
30	हिंदी कहानी साहित्य का परिवर्तित स्वरूप	गणेश दिवटे	105
31	हिंदी कहानी साहित्य का परिवर्तित स्वरूप	प्रा. सविता तोडमल	109
32	हिंदी काव्य साहित्य का परिवर्तित स्वरुप	डॉ. अनिता नेरे, डॉ. योगिता अपूर्व हिरे	112
33	ग़ज़ल साहित्य का बदलता स्वरुप	डॉ.जालिंदर इंगळे	115
34	सतसई या दोहावली का बदलता स्वरुप	प्रा.राजाराम शेवाळे	118

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625,
Special Issue 210 : साहित्य व्यवहाराचे बदलते स्वरूप
Peer Reviewed Journal
ISSN : 2348-7143
December-201

हिंदी नाटक साहित्य का परिवर्तित स्वरूप – 'वक्ता – श्रोता के संदर्भ में –'

डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कर्मवीर भाऊसाहेब हिरे कला विज्ञान एवं
वाणिज्य महाविद्यालय, निमगांव,
तहसिल मालेगांव, जिला नासिक
(महाराष्ट्र)

हिंदी साहित्य की नाटक वह विधा है जिसकी सफलता का परीक्षण रंगमंच पर होता है। यह एक ऐसी विधा है जिसका आलेख लिपिबध्द होता है, लेकिन प्रस्तुति –प्रचार प्रदर्शन द्वारा होता है। अधिकांशतः विद्वानों ने नाटक की उत्पति 'नट्' धातु से मानी है। कृष्णाजी श्रीवास्तव के शब्दों में "नाटक दृश्य साहित्य की उत्कृष्ट विधा है। सौंदर्य के आश्रय से आनंद को उत्पन्न करके, सत्य दर्शन की ओर प्रेक्षकों को आकर्षित करना नाटक का उद्देश्य होता है।" भरतमुनि ने नाटक का उद्देश्य चार पुरूषार्थो – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति करना माना है। नाटक में इनमें से जितने पुरूषार्थी की उपलब्धि होती है, वहॉ नाट्य लेखन उतना ही अधिक सफल माना जाता है। फिर भी यह आवश्यक नहीं की नाटक की रचना करते समय इन चारों तत्वों का समावेश करने की चेष्टा की जाए।"

वर्तमान हिंदी साहित्य में नाट्य–लेखन पूर्णतः व्यावसायिक हो गया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि नाट्य लेखन में स्तरीयता का अभाव मिलने लगा है। प्रायः होना तो यह चाहिए कि नाटककार जो भी नाटक लिखे वह समाज सापेक्ष हो, लोक–कल्याणकारी हो, मानव मनोवृत्तियों को प्रभावपूर्ण ढंग से उभारने वाला हो। ऐसा न हो कि व्यावसायिकता की आड में और बढ़ते पाश्चात्य प्रभाव से वह विसंगति फैलाए। नाटक का लेखन एक विशिष्ट कार्य है, किसी भी लेखक को मानव–जीवन के भिन्न–भिन्न रहस्यों समाज के रीति–रिवाजों, सभ्यता–संस्कृति, वेशभूषा, बोलचाल की भाषा आदि का जितना अधिक ज्ञान होगा, लेखक उतना ही अपनी रचना में सफल होता है।

आजकल नाटक को श्रोता वर्ग बहुत कम दिखाई देता है। वक्ता–श्रोता और वक्तव्य नाटकीय संवाद के तीन प्रतिमान है। संवाद का तो यह प्रमुख संरचनात्मक तत्व है। क्योंकि संवाद वक्ता और श्रोता के बीच स्थिति और संदर्भ–विशेष में होनेवाला आंतर–वैयक्तिक संप्रेषण है। इस दृष्टि से संवाद के लिए दो व्यक्तियों अर्थात सबोधक (वक्ता/मैं) और संबोधित (श्रोता/तुम) का होना, परस्पर जुडना और बोलना अपरिहार्य है। वक्ता–श्रोता के इस ध्रुवीकरण, किया–प्रतिकिया, ग्रहण–प्रतिग्रहण और स्थान–विनिमय से उत्पन्न आंतर–कियाओं में मानवीय संबंध मानसिक, वैचारिक और ऐंद्रिय संवेदनाऐं अभिव्यक्त होती है, और संवाद में लय, वैषम्य, परिपूरकता और संघर्ष आदि की भूमिकाऍं सामने आती है।

संवाद में वक्ता–श्रोता कमशः अपने को अभिव्यक्त करते हैं। वक्ता बोलने में जिस भाषा का प्रयोग करता है, उच्चारण करते समय स्वयं सुनकर उसका अनुभव भी

करता है। वक्ता का बोलना उसका अपना सुनना है जिसमें वक्ता की आत्म–चेतना जाग्रत रहती है। वक्ता जो कुछ और जितना कथ्य संप्रेषित करना चाहता है उसको और कथन में निहित संदेश की अर्थवत्ता को समझना श्रोता का कार्य है। मानव अभिरुचियाँ और व्यवहार संवाद के लिए भाव–राशि जुटाता है और वाग्व्यवहार की संरचनाएँ शैलीय विशिष्टताओं और व्यंग्यार्थ को समाहित करती हैं। परिणामस्वरूप संवादों को कई साँचों में ढलना पड़ता है।

वक्ता–श्रोता के बीच संदर्भपरक 'संदेश' होता है जो उद्दीपन तथा अनुक्रियाएँ उत्पन्न करता है। यह, संवाद का सर्वाधिक सक्रिय तत्त्व तथा एक गतिशील अर्थ की इकाई है जिसका नाटक में शनैः प्रकटीकरण होता है। संदर्भ के बिना संवाद को समझा ही नहीं जा सकता। संदर्भ ही स्थिति को संवाद से संयुक्त करता है और यह संदर्भ वक्ता–श्रोता के परस्पर कथनों में स्वतः ही उद्भूत होता है। वस्तुतः भाषिक प्रयोगों में परंपरा के कारण एक नियमितता आ जाती है जिससे वक्ता–श्रोता दोनों एक–दूसरे के प्रयोग को समझने में समर्थ होते हैं और संवाद में संलग्न व्यक्तियों के मध्य संवादिक संबंध उत्पन्न हो जाता है जिससे व्यक्ति किसी निश्चित कार्य की ओर प्रवृत्त होता है।

संदर्भ संवाद के पूर्ववर्ती संवादों और उनमें व्यक्त अभिप्रायों और कथ्यों से निर्मित होने के साथ–साथ भाषिक–स्थिति से भी जुड़ा होता है। स्थितियाँ संबंधों के लिए आधार सामग्री जुटाती हैं, वक्ता–श्रोता के बीच तनाव को उत्पन्न कर उद्दीपन का कार्य करती हैं जो प्रत्यक्ष भी हो सकता है नाटक के संदर्भ, पात्र के पूर्वानुभवों, कल्पना और अपरोक्ष में भी हो सकता है। स्थिति प्रायः संवाद को विषयवस्तु के साथ प्रस्तुत करती है तथा संवाद में विभिन्न प्रकार से हस्तक्षेप करती है, रास्ते को खोलने के लिए विपर्ययों या रूपांतरणों और कभी–कभी अवरोधों को पूर्ण रूप से प्रभावित करती है। संवाद स्थिति को प्रगतिशील रूप से वर्णित करता है और प्रायः इसे रूपांतरित और परिवर्तित करता है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि नाटक इतना बड़ा न हो कि दर्शक उबने लगे। अतः उसे अत्यंत संतुलित होकर नाट्य–रचना करनी होती है। कृष्णाजी श्रीवास्तव के शब्दों में "एक अच्छी रचना वही होती है जिसमें नाटक का निर्देशक अनावश्यक छेड़छाड़ करने पर मजबूर न हो। काल और स्थान जैसी समस्याएँ अक्सर निर्देशकों के सामने आती रहती हैं। इसीलिए जटिल दृश्यों की परिकल्पना करते समय रंगमंच की सीमाओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए। नाट्य लेखन में कार्य, काल और स्थान की संयोजना करते समय बड़ी सतर्कता की आवश्यकता है।" जिस नाटक में श्रोता और वक्ता का संवाद सफल हो वह नाटक सफल होता है।

संदर्भ सूची :

1. नाटक और रंगमंच – डॉ. राजमल बोरा, पृ. 56
2. मीडिया लेखन – डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, डॉ. पवन अग्रवाल, पृ. 50
3. नाटक की साहित्यिक संरचना – डॉ. गोविंद चातक पृ. 131
4. काव्यभाषा और नाट्यभाषा का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 55
5. Jiri Veltrusky, Drama, पृ. 27